अध्याय–२

संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

2 अध्याय -२

2.1 सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अनुसंधान में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन का वह अभिन्न अंग है। जिसके प्रकाश में अनुसंधान कार्य के लिए विषय क्षेत्र का ज्ञान प्रदान करता हैं अध्ययन हेतु वर्तमान स्थिति का ज्ञान कराता है तथा इस तथ्य का भी आभास देता है कि लिया गया अनुसंधान कार्य किस सीमा तक व्यवहारिक व सफल हो सकेगा।

प्रस्तुत अध्याय में प्रारंभिक बाल शिक्षा अर्थात पूर्व प्राथमिक शिक्षा से संबंधित कुछ अनुसंधान अध्ययनों का वर्णन किया गया है–

- आसी एस.के. (1989) ने "बच्चों में विद्यालय तत्परता का पूर्व प्राथमिक शिक्षा के साथ तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा के बिना अध्ययन किया।" इस अध्ययन विद्यालय उद्देश्य यह जानना था कि– (1) जो बच्चे पूर्व प्राथमिक विद्यालय जाते है, प्राथमिक शिक्षा अवस्था पर उनकी बेहतर प्रगति होती है। (2) पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों को प्राथमिक अवस्था में समायोजन तथा अधिगम समस्याओं में मदद करती है। (3)अभिभावक तथा शिक्षक पूर्व प्राथमिक शिक्षा की बच्चों के लिए लाभप्रद मानते है। इस अध्ययन के लिए सरकारी विद्यालय की कक्षा 1 के 30 बच्चों का प्रतिदर्श चुना गया जिसमें 15 बच्चों ने पूर्व विद्यालयी शिक्षा ग्रहण की थी जबकि 15 बच्चों ने यह शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। अभिभावकों के लिए मतावली, शिक्षकों के लिए प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा बच्चों के लिए लिखित तथा मौखिक परीक्षण लिए गए ।पाप्त निष्कर्ष हैं– (1) सभी अभिभावकों ने पूर्व प्राथमिक शिक्षा को महत्व दिया उन्होंने माना कि यह बच्चों औपचारिक विद्यालय शिक्षा के लिए तैयार करती है, जिन अभिभावकों के बच्चों ने पूर्व विद्यालयी शिक्षा नहीं प्राप्त की थी वे भी इसके पक्ष में थे। (2)पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व विकास को बढ़ाती है तथा विद्यालय में समयोजन करने में मदद करती हैं (3) कक्षा 1 के जिन बच्चों ने पूर्व प्राथमिक शिक्षा पाई थी उनमें सीखने के लिए तत्परता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। (4) शिक्षकों का मानना था कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा औपचारिक विद्यालय से पहले की आवश्यकता हैं
- मैयानी,जे.जी. (1989) ने "स्वतंत्रता के बाद गुजरात में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विकास का अध्ययन" स्वतंत्रता के पश्चात गुजरात में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विकास को निम्नलिखित उद्देश्य से किया– (1) गुजरात राज्य में स्वतंत्रता के बाद पूर्व प्राथमिक शिक्षा में हुए मात्रात्मक तथा गुणात्मक विकास को जानना ।(2) भारत तथा गुजरात में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की ुरूआत तथा

विकास को जानना। (3) पूर्व प्राथमिक के दार्शनिकश सामाजिक ,मनोवैज्ञानिक आधार को समझना ।(4) पूर्व प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि तथा साहित्य के संबंध के जानकारी ज्ञात करना। (5) पूर्व प्राथमिक शिक्षा के संस्थानों के विकास,प्रबंधन तथा शिक्षकों के संबंध में जानकारी लेना। (6) पूर्व प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं से परिचित होना। इस अध्ययन हेतु गुजरात राज्य के सभी पूर्व प्राथमिक विद्यालय को न्यादर्श में शामिल किया गया। जिसके लिए सरकारी प्रलेख, रिपोर्ट, संस्थानों का वार्षिक प्रतिवेदन आकड़ो के लिए प्राथमिक स्त्रोत के रूप में तथा संतुष्टिजनक नहीं था। (2) इस शिक्षा का मुख्य आर्थिक भार अभिभावकों पर है, सरकार केवल आंशिक सहायता देती है।(3) प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या तथा स्तर बढ़ाना चाहिए।(4) पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता है।(5)पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्यों व उद्देश्यों को सामाजिक परिर्वन के अनुसार पुनर्गठित करने की आवश्यकता है।(6) सरकारी अनुदान के अभाव में विद्यालय प्रबंध का एक मात्र उद्देश्य लाभ कमाना है। (7) पाठ्यक्रम में बहुत भिन्नता है और इसका कोई वैज्ञानिक आधार नही है। (8) शिक्षकों बहुत कम आय, शिक्षकों को प्रशिक्षण का अभाव है।

- मंदके, एस. (1989) ने "पूर्व विद्यालयी छात्रों की अधिगम योग्यताओं पर पूर्व विद्यालयी शिक्षा के प्रभाव को ज्ञात करने के लिए अध्ययन " किया। इसके लिए इन्होंने एक विद्यालय में इनके समायोजन को सुविधाजनक बनाने का प्रयास किया। इसके उद्देश्य थे– (1) कक्षा 1के बच्चों से विद्यालयी संबंधी अपेक्षाओं को जानना। (2)यह जानना कि पूर्व विद्यालयी शिक्षा बच्चों को भाषा तथा अन्य विद्यालयी विषय बेहतर तरीके से सीखने में मदद करती है। अध्ययन हेतु न्ययदर्श में120 बच्चे शामिल किये गए जिनमें से 100 बच्चों ने पमर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की थी जबकि 20 बच्चों ने यह शिक्षा प्राप्त नही की। यहॉ उपकरण के रूप में साक्षात्कार अनुसूची तथा भाषा व विद्यालयी तत्परता परीक्षण शामिल किये गए। प्रमुख निष्कर्ष–(1) बिना पूर्व विद्यालयी शिक्षा प्राप्त बच्चों को भाषा विकास के और अधिक अनुभवों की आवश्यकता थी हालांकि उनका विद्यालयी विषयों को सीखने के लिए तैयार की आवश्यकता है।
- पंकजम, जी. तथा साथियों (1990) ने तमिलनाडु में बाल देखरेख सेवाओं का अध्ययन" किया। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि– (1) बच्चे वात्सल्यपूर्ण देखरेख तथा सुरक्षा प्राप्त कर रहे है। (2) बच्चों को उचित पोषण, सुरक्षित वे प्रेरक स्वस्थ वातावरण

मिल रहा है। (3) बच्चों की स्वस्थ सामाजिक, मानसिक व भावात्मक विकास की जरूरतों को खेल तथा उपयुक्त ैक्षिक क्रियाओं द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस अध्ययन के लिए प्रबंधक, अभिभावकों, स्टॉफ तथा समुदाय के सदस्यों से व्यक्तिगत तथा प्रत्यक्ष विचार विमर्श द्वारा जानकारी एकत्रित की गई। प्रमुख निष्कर्ष है– (1) तमिलनाडु में 2–5 वर्ष तक के बच्चों की देखभाल सेवाएँ, राज्य द्वारा निर्धरित न्यूनतम प्रावधान के अनुसार तथा उत्तम थी। (2) यह बच्चों पर केन्द्रित थी। (3) दिवस देखभाल केन्द्रों की भौतिक सुविधाएं उत्तम थी परन्तु उनकी गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता थ्ज्ञी। (4) इन बाल देखरेख सेवाओं में निजही क्षेत्र को रिकार्ड सरकारी क्षेत्र से अच्छा था। (5) बाल–देखरेख कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षिण की सुविधा नियमित नही थी।

- मिश्रा.डी. (1990) ने " कटक ाहर की पूर्व विद्यालयी शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन " किया ताकि इन समस्याओं का समाधान किया जा सके। इसके उद्देश्य थे–(1) कटक में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं का सर्वेक्षण करना। (2) विभिन्न पूर्व प्राथमिक विद्यालयों का विभिन्न शिक्षा योजनाओं के उद्देश्य,लक्ष्यों तथा पाठ्यक्रम के संबंध में विश्लेषण करना। (3) पूव्र प्राथमिक शिक्षा की तथा शिक्षको की विभिन्न समस्याओं को पहचानना (4) पूर्व विद्यालय के बच्चों के लिए कार्यकम विकास हेतु उपाय देना । इन अध्ययन के लिए कटक शहर के पूर्व प्राथमिक विद्यालय तथा उनके शिक्षकों को शामिल किया गया। इससे संबंधित जानकारी प्रश्नावली के द्वारा प्राप्त की गई। प्रमुख निष्कर्ष– (1) अधिकांश विद्यालय मांटेसरी पद्वति पर आधारित थे। (2) विद्यालय की कक्षाएँ बच्चों के लिए अनुपयुक्त थी। (3) शिक्षण–अधिगम सामग्री संतुष्टिजनक नहीं थी। (4) बालक के विकास की जानकारी के अभाव के कारण विकास के सभी पहलुओं पर कियाएँ नही कराई जाती थी। (5) शिक्षकों के प्रति प्रबंधक नकारात्मक व्यवहार राखते थे। (6) शिक्षण माध्यम उड़िया भाषा था तथा सभी प्रशिक्षित थे।
- नागालक्ष्मी, जे. (1991) ने " पूर्व विद्यालयी अवस्था के लिए कुछ आवश्यकताओं को स्थापित करने के लिए यह अध्ययन" किया इसके उद्देश्य निम्नलिखित है:–

(1) मित्रता, क्रियाओं तथा बच्चों के लिए व्यवहार के संदर्भ मे बच्चों के समूह आकार के प्रभाव का अध्ययन करना। (2) मित्रता, क्रियाओं तथा बच्चों के व्यवहार पर स्थान की मात्रा तथा खेल सामग्री के

प्रभाव का अध्ययन करना। (3) बच्चों तथा स्टॉक के बीच संप्रेषण पर बच्चों के अनुपात तथा स्टॉफ के परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन करना। इसके लिए इन्होंने हैदराबद तथा सिकंदराबाद से (156 केन्द्र) तथा तेलंगाना क्षेत्र से (वारंजल 160 करीमनगर, 156 केन्द्र) का न्यायदर्श लिया। अध्ययन हेतु अवलोकन, रिकार्डिंग तथा व्यक्तिगत जानकारी द्वारा प्रदत्त एकत्रित किए गए। मुख्य निष्कर्ष :– (1) सघन ाहरी क्षेत्र में रहने वाले बच्चों को गत्यात्मक खेल क्रियाओं का अवसर देना चाहिए। ये बच्चों को मित्रता करने का अवसर देते हैं (2) बच्चों में सामाजिक व्यवहार विकसित करने के लिए सहयोगात्मक खेलों को बढ़ावा देना चाहिए। (3) यदि खेल सामग्री बढ़ाई जाए जो सभी के पास समान हो तो यह बच्चों में तनाव तथा आक्रामक व्यवहार को नियंत्रित करने में सहायक है। (4) यदि स्टॉफ व बच्चों की संख्या का अनुपात बढ़ता है तो व्यक्तिगत अवधान बढ़ने से बच्चें का ज्ञानत्मक तथ्ष्ज्ञा भ्ज्ञावात्मक उद्दीपन बढ़ता है।

- यशोधरा,पी. (1991)ने " पूर्व विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न पक्षों के प्रति शिक्ष कवे अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन" इस उद्देश्य से किया– (1) पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य के संदर्भ में, (2) जरूरतमंद बच्चों के संदर्भ में, (3) पूर्व प्राथमिल शिक्षा के पाठ्यक्रम में तथा क्रियाओं के संदर्भ में अभिभावक और शिक्षकों की अभिवृत्ति जानना । इस अध्ययन के लिए न्यादर्श कटक तथा भुवनेश्वर के विभिन्न विद्यालय से चुना गया। शिक्षकों व अभिभावको से पंश्नावली द्वारा आकड़े एकत्रित किये गए। प्रमुख निष्कर्ष– (1) अभिभावकों तथा शिक्षकों के पूर्व प्राथमिक शिक्षा के संबंध में मत यह प्रदर्शित करते है ि कवे बच्चे के विकास में अपनी वास्तविक भूमिका की उपेक्षा कर देते है। (2) अभिभावक व शिक्षकों ने वंचित तथ्ष्ज्ञा जरूरतमंद बच्चों के लिए उपचारात्मक तथा पूर्तिकारक शिक्षा को आवश्यक माना। (3)अभिभावक तथा शिक्षक मातृभाषा उड़िया में पढ़ाने की अपेक्षा अंग्रेजी पढ़ाने के पक्ष में थे।
- श्राराजलक्ष्मी, एम् (1992) ने " केरल में नर्सरी शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन के लिए अध्ययन " किया। इसके उद्देश्य थे–(1) नर्सरी शिक्षा कार्यक्रम के पाठ्यक्रम, स्वास्थ्य देखभाल तथा अभिभवक सहयोग कार्यक्रमों के संगठन, नियोजन तथा भौतिक सुविधाओं का सर्वेक्षण करना। (2) नर्सरी विद्यालयों मे पढ़ाने वाले शिक्षकों का अध्ययन करना तथा नर्सरी कार्यक्रमों के विभिन्न पक्षों व वर्तमान अभ्यास पर उनके विचार जानना। इस अध्ययन के लिए केरल राज्य

के 335 नर्सरी विद्यालयों को न्यादर्श में शामिल किया। विद्यालय प्रमुख तथा शिक्षकों से अलग–अलग प्रश्नावली द्वारा सूचनाएँ एकत्रित की गई। प्रमुख निष्कर्ष–(1) 8% नर्सरी विद्यालय मान्यता प्राप्त थे लेकिन उन्हे केरल सरकार द्वारा आर्थिक मदद प्राप्त नहीं थी। (2) 50% विद्यालय अस्थाई तौर पर किराये के भवनों में संचालित थे। (3) 80 विद्यालयों में खेल का मैदान नहीं था। (4) 60 विद्यालयों अधिगम सामग्री का निर्माण करते थे (5) शिक्षक छात्र अनुपात 1:20 था। (6) 96 विद्यालय में मलायलम भाषा संप्रेषण माध्यम थी। (7) 64 अभिभावक विद्यालय कियाओं में भाग लेते थे।

- सूद,एन.(1992)ने "समेकित बाल विकास योजना (ICDS)कार्यक्रम में पूर्व विद्यालयी घटकों का मूल्यांकन " किया । इसके उद्देश्य थे।–(1)(ICDS)तथा गैर ICDS के पूर्व प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के समूहों के विकास का तुलनात्मक मूल्यांकन करना । (2) ICDS तथा गैर ICDS समूहो के कक्षा 1 व 2 का बच्चों के विद्यालय में प्रदर्शन का तुलनात्मक मूल्यांकन करना।(3) ICDS तथा गैर ICDS के समुह की माताओं में स्वस्थ्य तथा पोषण की आवश्यकताओं तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा के मुल्य के प्रति जागरूकता का तुलनात्तमक अध्ययन करना। इस अध्ययन के लिए 64. पूर्व प्राथमिक विद्यालयी बच्चे तथा उनकी माताओं तथा कक्षा 1 व 2 के 40 बच्चों को शामिल किया,जिन्होंने पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण नही की हो। आंगनबाड़ी का अवलोकन ,पूर्व विद्यालयी बच्चों के लिए विकास मापन हंतु चिन्हाकंन सूची ,शिक्षकों के लिए निर्धारण मापनी तथा माताओं के साक्षात्कार द्वारा संबंधित जानकारी एकत्रित की गई। प्रमुख निष्कर्ष –(1) प्राथमिक के बच्चों का सर्वागीण विकासात्मक स्4तरी की ICDS सेवाएँ बढ़ाती है। (2)आंगनबाड़ी से निकले बच्चे प्राथमिक विद्यालय में अक्न्य बच्चों से बेहतर प्रदर्शन करते है। (3) ICDS सेवाएँ बच्चों के पोषण आवश्यकताओं तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा के मूल्यों के प्रति माताओं की जागरूकता का स्तर बढ़ाती हैं।
- सेठ,के.तथा अहुजा के.(1992)–ने "पूर्व प्राथमिक विद्यालय के सनिए न्यूनतम विशिष्टताओं " पर कार्य किया यह अध्ययन प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम को समरूपता प्रदान करने तथा इसकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने कि लिए कुछ आवश्यकताएं तथा मानक स्थापित करने के उद्देश्य से किया सगया। यह प्रलेख कई कार्यशालाओं के उपरांत निर्मित हुआ । इसमें न्यूनतम विशिष्टाओं के रू॰ में पूर्व

प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के निम्नलिखित पक्षों को शामिल किया हैं :—1.भौतिक सुविधाएं 2.उपकरण तथा सामग्री 3.सुरक्षा 4.विद्याालय स्टॉफ 5.प्रवेश आयु 6.प्रवेश विधि 7.विद्यालय कार्यक्रम 8.रिकार्ड व रजिस्टर । इसके प्रमुख निष्कर्ष थे–(1) पूर्व प्राथमिक विद्यालय 1/2से 1कि.मी के दायरे में स्थित होना चाहिए । (2)प्रत्येक समूह के लिए खेल मैदान का आकार न्यून्तम 15X20/30प्रदान किया जाना चाहिए । (3)कक्षा का न्यूनतम आकार 35 वर्ग मीटर होना चाहिए ।(4)पीने के साफ पानी की सुविधा प्रदान करनी चाहिए ।(5)शिक्षण अधिगम सामग्री को रखने लिए स्टोर स्पेस होना चाहिए ।(6)बच्चों को कूदने ,उछलने,साइक्लिगं आदि के अनुभव के लिए उन्नत उपकरण तथा सामग्री उपलब्ध कराना चाहिए।(7)काल्पनिक खेल तथा जोड़–तोड़ के खेल के लिए सामग्री जैसे –मोती ,बोर्ड ,क्ले आदि प्रदान कराना चाहिए । (8)फर्स्ट–एड–किट प्रदान करना चाहिए।(9) शिक्षक कम से कम 12वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा 2 वर्ष की ई.सी.ई प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए ।(10)प्रवेश विधि ने बच्चे का मूल्यांकन नहीं किया जाना चाहिए । (11)पूर्व प्राथमिक कार्यक्रम में स्वास्थ तथा पोषण को आवश्यक रूप से शामिल किया जाना चाहिए । (12)बच्चों के विकास तथा वृद्धि का व्यस्थित रिकार्ड चाहिए ।

- दिनकर ,एच.(2000)ने "भोपाल शहर में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य का आलोचनात्मक अध्ययन "निम्ननिखित उद्देश्य से किया :–(1)पूर्व –विद्यालय शिक्षा के विकास एतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना (2)भोपाल शहर में पूर्व विद्यालयों के कियान्वयन का अध्ययन करना ।(3)पूर्व विद्यालयी कार्यक्रम पर दिये गए राष्ट्रीय सुझाव्रों के संदर्भ में शिक्षकों तथा विद्यालयों में उपलक्ष्य सेवाओं का अध्ययन करना।(4)पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में उपलक्ष्य सेवाओं का अध्ययन करना । (5)पूर्व विद्यालय के प्रोफाइल का अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने भोपाल शहर के चुने हुए 6 विद्यालयों को न्यादर्श में शामिल किया। शिक्षकों ,विद्यालय प्रमुख तथा छात्र से प्रश्नावली द्वारा तथा अवलोकन अनुसूचि द्वारा संबंधित जानकारी एकत्रित की गई।मुख्य निष्कर्ष हैं–(1)50 से 80% विद्यालयों में भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध है।(2) 50% विद्यालय में प्रशिक्षित शिक्षक नियुक्त थे लेकिन किसी ने भी पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतू विशेष प्रशिक्षण नहीं लिया था ।(3) 50%विद्यालयों में वाचन लेखन पर जोर दिया गया ।
-

भटनागर ,वी.,छिकारा ,एस,तथा दूहान ,के.(2003)ने "राजस्थान तथा हरियाणा राज्य में पूर्व–विद्यालयी कार्यकमों में शिक्षण नीतियों के स्तर का अध्ययन किया।इसका उदेदश्य था –राजस्थान तथा हरियाणा राज्यों में शिक्षकों द्वारा अपनाई जाने वाली शिक्षण विधियों व नीतियों को सदर्भ में कार्यकम का स्तर ज्ञात करना । इस अध्ययन के लिए राजस्थान के बीकानेर तथा हरियाणा के हिसार जिले के 74 पूर्व प्राथमिक विद्यालय का न्यादर्श चुना गया। शोधकर्ता द्वारा निर्मित साक्षात्कार

अनूसची ,अवलोकन अनूसुची तथा चिन्हांकन सूची की सहायता से सूचनाएं एकत्रित की गई । प्रमुख निष्कर्ष था –यद्यपि शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली विधिया। विकास की दृष्टि से उपयुक्त तथा श्रेष्ठ नहीं थी फिर भी बीकानेर जिले के शिक्षकों द्वारा उपयोगित शिक्षण विधियों हिसार जिले के शिक्षकों द्वारा उपयोगित शिक्षण विधि व नीतियों से तुलना में बेहतर थी।

- सत्यार्थी ,जी (2005) ने ग्वालियर जिले में पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यकम के कियान्वयन का अध्ययन "निम्नलिखित उदेदश्यों के साथ किया –पूर्व प्राथमिक कार्यकम के विभिन्न पहलुओं के कियान्वयन का – (1) कार्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ।(2)अभिभावकों को परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।(3)पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यकम के संबंध में कार्यकार्ताओं व अभिभवकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।(4)मूलभूत संरचानाओं एवं कियान्वयन का निरीक्षणात्मक अध्ययन करना ।इसके लिए ग्वालियर जिले के 60 आंगनवाडियों को न्यादर्श में शमिल किया गया । अध्ययन संबंधी जानकारी प्रश्नावली ,साक्षात्कार तथा निरीक्षण अनूसुची द्वारा एकत्रित की गई ।मुख्य निष्कर्ष है–(1)मूलभूत संरचना तथा प्राप्त सामग्री का स्तर संतुष्टीजनक नहीं था ।(2) सभी कार्यकर्ता प्रशिक्षित थे।(3) सभी कार्यकर्ता तथा अभिभावक पोषक आहार की गुणवत्ता से असंतुष्ट पाये गये। (4)80 प्रतिशत कार्यकर्ता बदलाव चाहते थें।
- सिंह,आर.(2006)ने "भुवनेश्वर शहर में प्रारभिक बाल शिक्षा के वर्तमान स्तर का अध्ययन "निम्नलिखित उददेश्यों के साथ किया–(1)भुवनेश्वर के ई.सी.ई.केन्द्रों में वर्तमान स्तर का अध्ययन"निम्नलिखित उदेद्श्यों के साथ किया।(2) इन ई.सी.ई केन्द्रों में कार्यरत शिक्षकों की न्युनतम योग्यता ज्ञात का करना ।(3)इन ई.सी.ईकेन्द्रों में उपयोंग किये जाने वाले उपकरणों तथा सामग्री का अध्ययन करना ।(4)इन ई.सी.ई.केन्द्रों में अपनाई जाने वाली विधियों तथा पाठ्यकम का अध्ययन

करना।(5)ई.सी.ई के संदर्भ में शिक्षकों तथा अभिभावकों के दृष्टिकोण ज्ञात करना।इस अध्ययन करना।इस अध्ययन के लिए भुवनेश्वर शहर के 10 ई.सी.ईकेन्द्रों को न्यादर्श में शामिल किया गया तथा अवलोकन अनूसुची तथा शिक्षकों से साक्षात्कार व प्रश्नावली द्वारा जानकारी एकत्रित की गई। इनके मुख्य निष्कर्ष हैः–(1)60 प्रतिशत ई.सी.ई. केन्द्रों का स्तर एन.सी.ई.आर.टी.द्वारा स्थापित मानकों के अनुरूप है।(2)40 प्रतिशत ई.सी.ई.केन्द्रों में गुणवत्ता युक्त शिक्षण नहीं होता ।

इस अवस्था में विकास की इस तीव्र होती है । इसी दौरान व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा मूल्यों अवधारणाओं की नीव पढती है।